ये है राम नाम की महिमा जो जन्म जन्मांतर तक रहती है साथ

भक्त और भगवान के बीच श्रद्धा को चित्रित करती यह कथा अमूमन हिंदू पौराणिक ग्रंथों में मिल जाएगी। कथा के अनुसार अयोध्या में एक निम्न जाति का व्यक्ति रहता था। उसके पास कुछ धन था, इसलिए वह घमंडी हो गया। लेकिन उसका धन समय के साथ खत्म हो गया। इसलिए वह रोजगार की तलाश में अयोध्या से उज्जैन पहुंच गया। यहां उसके जीवन-यापन करने की समस्या से छुटकारा मिल गया। उज्जैन में ही उसकी मुलाकात वेदों के ज्ञाता ब्राहमण से हुई। वह भी शिव भक्त था। लेकिन वह उस व्यक्ति की तरह देवताओं की निंदा नहीं करता था। एक दिन ब्राहमण ने उस व्यक्ति को एक शिवपूजन की विधि बताई। लेकिन उस व्यक्ति को बात समझ नहीं आई। ब्राहमण जानता था कि वह व्यक्ति धर्म-कर्म और भगवान में कोई रुचि नहीं रखता है। लेकिन वह भगवान के प्रति अच्छे भाव नहीं रखता था। एक समय की बात है। वह व्यक्ति शिव मंदिर में शिवजी का नाम जप रहा था। तभी किसी कारण से गुरुदेव वहां पहुंचे। उस व्यक्ति ने उन्हें देखा लेकिन उसने घमंड के कारण उन्हें प्रणाम तक नहीं किया। लेकिन गुरुदेव अत्यंत दयालु थे। शिष्ट और अनिष्ट व्यवहार से उन्हें क्रोध नहीं आता था।

लेकिन उसी समय एक आकाशवाणी हुई, 'तुम्हारे ब्राहमण गुरुदेव अत्यंत दयालु हैं और तुम उनकी निंदा करते हो गुरु से ईर्ष्या करने के कारण तुम्हें करोडों वर्षों तक नर्क भोगना होगा।' शाप की बात सुन गुरुजी एक बार फिर दु:खी हो गए और उन्होंने शिवस्तुति आरंभ कर दी। भगवान प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, इसे जल्द ही शाप से मुक्ति मिल जाएगी। उस व्यक्ति ने कई जन्मों के बाद जन्म लिया और मृत्यु हुई।

अंत में उसने एक ब्रहमण के घर जन्म लिया। पूर्व जन्म में जिसकी वह निंदा करता था लेकिन इस जन्म में उसके मुंह में सिर्फ राम नाम का जप रहता था। उसके पिता ने उसे पढाया लेकिन उसकी पढाई में मन नहीं लगता था। एक दिन वह व्यक्ति भगवान राम का जप करते हुए। सुमेरू पर्वत की चोटी पर जा पहुंचा। वहां लोमश ऋषि एक पेड की छाया में बैठे थे। ब्राहमण ने आदर से उन्हें प्रणाम किया। ऋषि से वो सगुण भक्ति निर्गुण भक्ति पर बहस करने लगा। ऋषि क्रोधित हो गए, उन्होंने कहा, हे मूर्ख तू बहस करता है। तू इसी समय चांडाल पक्षी हो जा। फिर क्या, ब्राहमण तुरंत कौआ हो गया, लेकिन कौआ होकर भी उसकी राम-नाम के प्रति भक्ति नहीं गई।

रामनवमी पर विशेष पूजन और दान से होती है पुण्य की प्राप्ति

हिंदू संस्कृति में रामनवमी बहुत ही पवित्र दिन माना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन विशेष पूजा-अर्चना करने और दान करने से काफी पुण्य की प्राप्ति होती है। रामनवमी के दिन भगवान श्रीराम की पूजा-अर्चना करने से विशेष पुण्य मिलता है। कहा जाता है कि इस दिन भगवान राम का जन्म हुआ था, इसीलिए इस दिन पूरे समय पवित्र मुहूर्त होता है।

लिहाजा, इस दिन नए घर, दुकान या प्रतिष्ठान में प्रवेश करना काफी शुभ होता है। ऐसे करें पूजन और दान-पुण्य इस दिन ब्रह मुहूर्त में उठकर स्नान करें। भगवान राम की तस्वीर को गंगाजल से पोंछकर उस पर कुमकुम, हल्दी और चंदन का तिलक करें। भगवान राम को पुष्प अर्पित करें। इसके बाद भगवान राम की तस्वीर के सामने घी का दीया जलाएं। रामनवमी के दिन भगवान राम को खीर या मेवे का भोग लगाया जाना चाहिए। रामनवमी के दिन पंडित जी को भोजन कराना चाहिए। अगर संभव न हो तो मंदिर में बिना पकी भोजन साम्रग्री भी दी जा सकती है।

भगवान राम की पूजा करते समय रामरक्षास्त्रोत का पाठ जरूर करना चाहिए। राम मंत्र, हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, सुंदर कांड आदि के पाठ से ना सिर्फ अक्षय पुण्य मिलता है बल्कि धन संपदा के निरंतर बढने के योग जाग्रत होते हैं। प्रभु राम की पूजा करने के बाद भोग के रुप में भोजन की थाली चढाएं। रामनवमी के दिन गरीबों, असहायों को दान देना और भोजन कराना चाहिए। रामनवमी के दिन अपने बुजुर्गों का आर्शीवाद भी अवश्य लें।

रामनवमी के दिन पास के किसी राम मंदिर में जाकर दीया जलाएं, प्रसाद चढाए। पूजा के बाद प्रसाद को ज्यादा से ज्यादा लोगों में बांटें। राम का जन्मोत्सव इसी तरह मनाएं जैसे घर में कोई नन्हा शिशु जन्मा हो। नवमी के दिन कुंआरी कन्याओं को भोजन कराएं। किसी भी नए कार्य की शुरुआत, नया व्यवसाय आरंभ कर सकते है।

श्रीराम स्मारक में उत्कीर्ण होगी इक्ष्वाकु वंशीय राजाओं की कीर्ति

अमरकंटक के तपस्वी संत कल्याणदास का यह स्वप्न साकार हुआ तो धर्मनगरी की आध्यात्मिक आभा में चार चांद लगना तय है। उनकी योजना भगवान राम के साथ ही उनके पूर्वजों की यशगाथा से भी जनसामान्य को परिचित कराने की है। 50 एकड में विस्तृत उदासीन संप्रदाय की सर्वोच्च पीठ उदासीन ऋषि आश्रम रानोपाली में हैरिटेज जोन स्थापित होगा। आश्रम परिसर में प्रस्तावित श्रीराम स्मारक में भगवान राम के जीवन प्रसंगों से जुडे चित्रों को उत्कीर्ण कर लोकोपयोगी संदेश अंकित किये जाएंगे।

स्मारक में इक्ष्वाकु वंशीय राजाओं में महाराज मनु, अज, दिलीप, शिवि, भागीरथ, हरिश्चंद्र आदि की मूर्तियों की स्थापना कर चित्रों के माध्यम से उनके जीवन से जुडे प्रसंगों को प्रस्तुत जाएगा। भगवान श्रीराम से जुडे धार्मिक-ऐतिहासिक ग्रंथों को संकलित कर श्रीराम विषयक शोधार्थियों के सहयोग के लिए समृद्ध पुस्तकालय की स्थापना भी की जाएगी।

उदासीन आश्रम के महंत व अमरकंटक के तपस्वी बाबा कल्याण दास कहते हैं कि ऐसी धार्मिक मान्यता है कि उदासीन आश्रम त्रेतायुगीन कैकेयी भवन है। इसी आश्रम परिसर स्थित गुरूसर में स्नान कर भगवान राम, लक्ष्मण व जानकी ने राजसी वस्त्रों का त्याग कर उदासी वेश धारण कर वन प्रस्थान किया था। इसी कारण यह आश्रम उदासीन सम्प्रदाय की सर्वोच्च पीठ के रूप में मान्य है। आश्रम परिसर में देशी गोंवंश के संरक्षण व संवर्द्धन के लिए पांच हजार गायों का गौशाला व बेहतर शिक्षा के लिए एक स्कूल खोलने का निर्णय भी लिया गया है। रामनगरी की आध्यात्मिक आभा को प्रखर करने के लिए आश्रम में 12 वर्षो के लिए अखंड सहस्त्रचंडी पाठ चल रहा है। ज्ञातव्य है कि संत बाबा कल्याण दास महाराज ने अमरकंटक में नर्मदा के उद्गम स्थल के पास ही भव्य आश्रम, श्रीचंद चिकित्सालय व स्कूल की स्थापना की है। हिमालय क्षेत्र के अल्मोडा जिले में उन्होंने 50 एकड भूमि पर कल्याण देवस्थानम आश्रम का निर्माण चार वर्ष पूर्व कराया है।

आश्रम के प्रबंधक ओमप्रकाश सिंह के अनुसार इक्ष्वाकु वंश के राजाओं की मूर्ति स्थापना से पूर्व देश के प्रमुख विद्वानों से विमर्श किया जाएगा। अयोध्या आने वाले पर्यटकों को श्रीराम से जुडी समस्त जानकारी एक ही स्थान पर देने का आश्रम का उदेश्य है।

देवकी के गर्भ से उत्पन्न आठवां पुत्र कंस का वध करेगा

त्रेतायुग के अन्त में और द्वापर युग के प्रारंभ समय में निन्दितकर्म को करने वाला कंस नाम का एक अत्यंत पापी दैत्य हुआ। उस दुष्ट व नीच कर्मी दुराचारी कंस की देवकी नाम की एक सुंदर बहन थी। देवकी के गर्भ से उत्पन्न आठवां पुत्र कंस का वध करेगा। नारदजी की बातें सुनकर इंद्र ने कहा, 'हे महामते उस दुराचारी कंस की कथा का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।' क्या यह संभव है कि देवकी के गर्भ से उत्पन्न आठवां पुत्र अपने मामा कंस की हत्या करेगा। इंद्र की सन्देह भरी बातों को सुनकर नारदजी ने कहा, 'हे अदितिपुत्र इंद्र एक समय की बात है।' उस दुष्ट कंस ने एक ज्योतिषी से पूछा कि ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ज्योतिर्विद मेरी मृत्यु किस प्रकार और किसके द्वारा होगी। ज्योतिषी बोले, हे दानवों में श्रेष्ठ कंस वसुदेव की धर्मपत्नी देवकी जो वाक्पटु है और आपकी बहन भी है। उसी के गर्भ से उत्पन्न उसका आठवां पुत्र जो कि शत्रुओं को भी पराजित कर इस संसार में कृष्ण के नाम से विख्यात होगा, वही एक समय सूर्योदयकाल में आपका वध करेगा।

ज्योतिषी की बातें सुनकर कंस ने

कहा, बुद्धिमानों में अग्रण्य अब आप यह बताएं कि देवकी का आठवां पुत्र किस मास में किस दिन मेरा वध करेगा। ज्योतिषी बोले, हे महाराज माघ मास की शुक्ल पक्ष की तिथि को सोलह कलाओं से पूर्ण श्रीकृष्ण से आपका युद्ध होगा। उसी युद्ध में वे आपका वध करेंगे। इसलिए हे महाराज आप अपनी रक्षा यत्नपूर्वक करें। इतना बताने के पश्चात नारदजी ने इंद्र से कहा, ज्योतिषी द्वारा बताए गए समय पर ही कंस की मृत्युकृष्ण के हाथ नि:संदेह होगी। तब इंद्र ने कहा, हे मुनि उस दुराचारी कंस की कथा का वर्णनकीजिए, और बताइए कि कृष्ण का जन्म कैसे होगा तथा कंस की मृत्यु कृष्ण द्वारा किस प्रकार होगी।

इंद्र की बातों को सुनकर नारदजी ने पुन: कहना प्रारंभ किया, उस दुराचारी कंस ने अपने एक द्वारपाल से कहा, मेरी इस प्राणों से प्रिय बहन की पूर्ण सुरक्षा करना। द्वारपाल ने कहा, ऐसा ही होगा। कंस के जाने के पश्चात उसकी छोटी बहन दु:खित होते हुए जल लेने के बहाने घडा लेकर तालाब पर गई। उस तालाब के किनारे एक घनघोर वृक्ष के नीचे बैठकर देवकी रोने लगी।

श्रीराम का स्वभाव अनुकरणीय

लखनपुरी में सुबह से ही रामभक्ति की बयार प्रवाहित होने लगी। परलोक सुधारने वाले श्रीराम कथा पाठ की शुरुआत अलीगंज स्थित नए हनुमान मंदिर में हुई। श्री महावीर जी ट्रस्ट की ओर से होने वाले आयोजन में श्रीराम तुलसी किंकर के शिष्य, उमा शंकर व्यास ने श्रीराम के स्वभाव को समस्त मनुष्यों के लिए अनुकरणीय बताया। उन्होंने विविध प्रसंगों से श्रीराम की महिमा का गुणगान किया। अयोध्याकांड के प्रसंग सुनाने के साथ वह बोले कि वनवास की आज्ञा सुनने के बाद भी श्रीराम अपने माता-पिता के पैर छूना नहीं भूले।

राजा दशरथ को इस बात का बडा ही दुख था। वह कौशल्या से बोले-मैं चाहूं तो अपने प्राण न त्यागूं, क्योंकि राम तो 14 साल बाद वापस आ ही जाएंगे, पर मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैंने तो उसे राज सुनाय दीन्ह बनबासू। इस पर भी वह मेरे पैर छूकर गया। ऐसे पुत्र के लिए भी अगर प्राण न त्याग सकू तो कब त्यागूंगा। कैकेयी ने भी कोपभवन में राजा दशरथ से सुमंत को नहीं मिलने दिया था क्योंकि उन्हें आशंका थी कि कहीं वह राजा दशरथ की मति न पलट दें।

कैकेयी का वचन बना रावण की मृत्यु का कारण

राजा दशरथ की तीन रानियां कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी थीं, और उनके चार पुत्र श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुधन। श्रीराम की एक बहन भी थीं। जिनका उल्लेख महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में नहीं है। अयोध्या के राजा दशरथ पुत्र श्रीराम को प्राणों से भी ज्यादा स्नेह करते थे। श्रीराम के प्रति उनका स्नेह किसी से छिपा नहीं था। लेकिन दूसरी ओर उनकी पत्नी कैकेयी को दिया हुआ वचन था। जिसके अनुसार उन्होंने भरत को अयोध्या का राजा और श्रीराम को 14 वर्ष के वनवास जाने का वचन दे चुके थे। लेकिन यह बात श्रीराम को पता नहीं थी। जब श्रीराम को पता चली कि उन्हें 14 वर्ष के वनवास के लिए जाना होगा, तब वह बिल्कुल भी चिंतित नहीं हुए। वह जानते थे कि उनका वन जाना लोगों के लिए हितकारी है। रावण का अंत। उनके कई भक्तों का उद्धार। ऐसे कई कारण थे, जो श्रीराम जानते थे।

वह जानते थे कि सौतेली माता को अयोध्या के राजा द्वारा दिए गए वचन रावण जैसे राक्षस के अंत का कारण है। जिसके लिए उन्होंने देवरूप से मनुष्य रूप में जन्म लिया है। उधर, जब से कैकेयी को यह वचन दशरथ दे चुके थे। तभी से वह अपने आप को माफनहीं कर पा रहे थे। उनकी तबियत दिनों दिन बिगडती जा रही थी। पिता की तबियत के बारे में सुन, श्रीराम उनके पास पहुंचे।

श्रीराम का राजा दशरथ से संवाद जैसे-जैसे राजा दशरथ की मृत्यु निकट आ रही थी, वैसे-वैसे

उनको उनके पूर्व कर्म याद आ रहे थे। उन्हें याद आ रहा था ऋषिकुमार श्रवण कुमार की हत्या, ऋषि कुमार के माता-पिता द्वारा दिया गया पुत्र शोक का शाप। उस समय राजा दशरथ का एक-एक पल बहुत ही दु:ख भरा बीत रहा था। श्रीराम वनवास के लिए जाने की तैयारी कर रहे थे उनके साथ माता सीता और अनुज लक्ष्मण भी थे। श्रीराम अपने पिता दशरथ के दर्शन के लिए उनके शयनकक्ष में पहुंचे। मुरझाए हुए चेहरे का मुखमंडल, आंखों में आंसू और चेहरे पर भीनी सी मुस्कान के साथ उनके मुख पर एक ही नाम, राम-राम-राम, बार-बार राजा दशरथ दोहरा रहे थे। वह दु:खी थे। श्रीराम ने पहले अपने पिता के चरण स्पर्श किए। पास ही बैठीं माता कैकेयी को भी प्रणाम किया। लेकिन राजा दशरथ, श्रीराम की तरफ देख भी नहीं रहे थे। यह देखकर श्रीराम को चिंता होने लगी। उन्होंने अपनी सौतेली माता कैकेयी से पूछा, 'पिताश्री मेरे साथ इस तरह का व्यवहार क्यों कर रहे हैं।' तब कैकेयी ने उत्तर दिया, 'राजा दशरथ ने रणभूमि में मेरी वीरता से प्रसन्न होकर दो वचन मांग लेने के लिए कहे थे। लेकिन मैंने उन्हें आज मांगा है। पहला कि भरत, अयोध्या का राजा बने और दूसरा राम तुम 14 वर्ष के वनवास पर जाओ। इस बात से राजा दशरथ काफी दु:खी हैं।' श्रीराम ने कहा, 'मुझे कोई समस्या नहीं, मैं वनवास पर जाने के लिए तैयार हूं।'

अंतत: श्रीराम अपने अनुज और पत्नी के साथ वन जाने लगे। अयोध्या की प्रजा दु:खी थी। सभी श्रीराम से कह रहे थे कि 'मत जाओ हे राम।' लेकिन श्रीराम वन की ओर चले गए।

भगवान श्रीराम के तीन भाई और एक थीं बहन

भगवान श्रीराम के तीन भाई थे। लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न, लेकिन उनकी एक बहन भी थीं। दक्षिण रामायण में इस बात का उल्लेख मिलता है कि भगवान श्रीराम और उनके तीनों भाईयों की बहन का नाम शान्ता था। शान्ता चारों भाईयों से बडी थीं। वह राजा दशरथ और कौशल्या की पुत्री थीं, लेकिन पैदा होने के थोडे ही दिन के बाद उन्हें अंगदेश के राजा रोमपद ने गोद ले लिया था। भगवान राम की बडी बहन का पालन-पोषण राजा रोमपद और उनकी पत्नी वर्षिणी ने किया, जो महारानी कौशल्या की बहन अर्थात राम की मौसी थीं। शांता के बारे में तीन कथाएं का उल्लेख मिलता है। पहली कथा के अनुसार, भगवान श्रीराम की मौसी यानी की कौशिल्या की बहन वर्षिणी नि:संतान थीं तथा एक बार अयोध्या में उन्होंने हंसी-हंसी में ही बच्चे की मांग की। दशरथ भी मान गए। रघुकुल का दिया गया वचन निभाने के लिए शांता अंगदेश की राजकुमारी बन गईं। शांता वेद, कला तथा शिल्प में पारंगत थीं और वे अत्यंत सुंदर भी थीं। वहीं, दूसरी कथा के अनुसार, शांता जब पैदा हुईं, तब अयोध्या में अकाल पडा और 12 वर्षों तक धरती धूल-धूल हो गई। चिंतित राजा को सलाह दी गई कि उनकी पुत्री शांता ही अकाल का कारण है। राजा दशरथ ने अकाल दूर करने के लिए अपनी पुत्री शांता को वर्षिणी को दान कर दिया। उसके बाद शांता कभी अयोध्या नहीं आई।

श्रीराम ने तोडा था भगवान भोलेनाथ का पिनाक

भगवान भोलेनाथ के पास एक ऐसा धनुष था जिसकी टंकार (धनुष की रस्सी को खींचने के बाद अचानक छोड देने वाली आवाज) से ही बादल फट जाते थे और पर्वत हिलने लगते थे। इसी धनुष के एक तीर से त्रिपुरासुर की तीनों नगरियों को भगवान शंकर ने ध्वस्त कर दिया गया था। इस धनुष का नाम पिनाक था। शिव पुराण में भगवान शंकर के इस धनुष का विस्तृत उल्लेख मिलता है। जब राजा दक्ष के यज्ञ में यज्ञ का भाग शिव को नहीं देने के कारण भगवान शंकर बहुत क्रोधित हो गए तो उन्होंने सभी देवताओं को अपने धनुष (पिनाक) से नष्ट करने की ठानी। एक टंकार से धरती का वातावरण भयानक हो गया। बडी मुश्किल से उनका क्रोध शांत किया गया, तब उन्होंने यह धनुष देवताओं को दे दिया। देवताओं ने राजा जनक के पूर्वज देवरात को यह धनुष दिया था। राजा जनक के पूर्वजों में निमि के ज्येष्ठ पुत्र देवरात थे। शिव-धनुष उन्हीं की धरोहरस्वरूप राजा जनक के पास सुरक्षित था। इस धनुष को भगवान शंकर ने स्वयं अपने हाथों से बनाया था। उनके इस विशालकाय धनुष को कोई भी उठाने की क्षमता नहीं रखता था। लेकिन भगवान राम ने इसे उठाकर इसकी प्रत्यंचा चढाई और इसे एक झटके में तोड दिया। भोलेनाथ का भवरेंदु चक्र सभी शस्त्रों में चक्र को छोटा, लेकिन सबसे अचूक अस्त्र माना जाता था। सभी देवी-देवताओं के पास अपने-अपने अलग-अलग चक्र होते थे। उन सभी के अलग-अलग नाम थे। भोलेनाथ के चक्र का नाम भवरेंदु है। विष्णुजी के चक्र का नाम कांता चक्र और देवी का चक्र मृत्यु मंजरी चक्र है। सुदर्शन चक्र भगवान कृष्ण का चक्र है। दरअसल सुदर्शन चक्र का निर्माण भगवान शंकर ने किया था। निर्माण के बाद भगवान शिवशंकर ने इसे श्रीविष्णु को सौंप दिया था। जरूरत पडने पर श्रीविष्णु ने इसे देवी पार्वती को प्रदान कर दिया। पार्वती ने इसे परशुराम को दे दिया और भगवान कृष्ण को यह सुदर्शन चक्र परशुराम से मिला। त्रिशूल यानी सत, रज और तम इस तरह भगवान शिव के पास कई अस्त्र-शस्त्र थे लेकिन उन्होंने अपने सभी अस्त्र-शस्त्र देवताओं को सौंप दिए। उनके पास सिर्फ एक त्रिशूल ही होता था। यह बहुत ही अचूक और घातक अस्त्र था। त्रिशूल 3 प्रकार के कष्टों दैनिक, दैविक, भौतिक के विनाश का सूचक है। इसमें 3 तरह की शक्तियां हैं- सत, रज और तम यानी प्रोटॉन, न्यूट्रॉन और इलेक्ट्रॉन। इसके अलावा पाशुपतास्त्र भी शिव का अस्त्र है।